International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

वेदना के प्रति छायावादी कवियों का दृष्टिकोण

श्रीमती सन्तोष
हिन्दी विभाग
E-mail: suman14narwal@gmail.com

शोध आलेख सार– छायावादी युग के कवियों ने विरह भाव को काव्य की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। यही कारण है कि उनके काव्य में वेदनानुभूति का अनन्त प्रसार दिखाई पड़ता है। छायावादी कविता के भाव पक्ष की चार प्रमुख विशेषताऐं हैं– कल्पना में वेदनानुभूति, व्यक्तिगत चिन्तन एवं आत्माभिव्यंजना, तत्वचिन्तन, रहस्य भावना आदि। छायावादी कवियों में कल्पना प्रवणता अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप वेदनानुभूति अत्यन्त तीव्र हो गई है। इन कवियों में व्यक्तिगत चिन्तन भी अधिक है, जिसके कारण उनके काव्य में व्यक्तिगत आशा, निराशा, दुःख असफलता के स्वर अधिक मुखरित है।

मूलशब्द– छायावादी युग, रहस्य भावना, वेदनानुभूति, आत्मभिव्यंजना, तत्व चिन्तन।

भूमिकाः छायावादी कवियों में प्रसाद, निराला और पंत का जीवन पारिवारिक मृत्युओं एवं तज्जन्य वेदनाओं से भरा रहा है। प्रसाद और पंत प्रेम–वेदनाओं से भी अछूते नहीं रहे, ऐसा अब सभी स्वीकार करते हैं। महादेवी स्वयं चाहे यह भले ही कहें कि उनका जीवन पीड़ा से मुक्त रहा है, पर वस्तुतः उनका विवाहित जीवन एकाकी होकर पीड़ायुक्त ही नहीं, द्वन्द्व–युक्त भी रहा है।

वेदना का अर्थ–

वेदना पीड़ा एवं करूणा मानव–मन की वे प्रवृतियां हैं, जिनका सम्बन्ध हृदय के कोमल पक्षों से है। ''करूणा अथवा सहानुभूति जीवन का ऐसा वरदान है जो मानव के साथ अनुभूति के एक ही सम्बन्ध में बांध देता है।

1. महादेवी वर्मा की वेदना अनुभूति– महादेवी जी पीड़ा के राज्य की रानी है। 'अपने इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली' और चिन्ता क्या है, हे निर्मम, बुझ जाये दीपक मेरा, हो जायेगा तेरा ही पीड़ा का राज्य अंधेरा,

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

पर शेष नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की पीड़ा
तुमको पीड़ा में ढूंढा
तुममे ढूँढूँगी पीड़ा।''[1]

1. व्यक्तिगत वेदना भाव– इसका व्यक्तिगत जीवन दुःखों व पीडाओं से परिपूर्ण रहा। इसका वैवाहिक जीवन एकांकी होकर पीड़ा युक्त रहा। इनका कथन– मैं नीर भरी दुःख की बदली।

'क्या अमरों का लोक मिलेगा, तेरी करूणा का उपहार,
रहने दो, हे देव! अरे यह मेरा मिटने का अधिकार।।[2]

2. वेदना में कल्पना के पुट– विरह–वेदना सहते–सहते कवियत्री का जीवन विरह का जलजात हो गया है। वेदना और करूणा से मुक्त हृदय आसुंओं का कोष और आंखे आसुंओं की टकसाल बन गई हैं।

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास,
अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात.....
आसुंओ का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,
तरल जलकरण से बने धन सा क्षणिक मृदुगात।।[3]

3.वेदना में आराधना का भाव– किसी की याद जब कवियत्री मन में लेकर चलती है तो कविता आराध्यमय हो जाती है।

'हो गई आराध्यमय में,
विरह की अराधना ले।[4]
'आकुलता ही आज हो गई तन्मय राधा,
विरह बना आराध्य, द्वैत क्या कैसी बाधा।।

4. समाज व मानवतावाद के दुःखों के प्रति अनुराग–

इनकी कविताओं में वेदना ही अधिक रही है। इन्हीं के शब्दों में – ''बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति एक भक्ति या अनुराग होने के कारण उनकी संसार को दुःखात्मक समझी जाने वाली फिलास से भी मेरा असमय ही परिचय हो गया था।''[5]

महादेवी की करूणा में निराशा का अंधकार नहीं है, वरन् व्यथा की आर्द्रता में सेवा का संकल्पमय जीवन छिपा हुआ है, करूणा बाधाओं को सहन करने वाली और लोक कल्याण को लेकर चली है।

5. दुःखों के प्रति उदारता– महादेवी जी ने दुःख व पीड़ा के प्रति भी उदार भाव रखा। दुःख ही इनके जीवन की कथा रही है फिर ये दुःखों के प्रति उदार भाव रखती है।

'दुःख के पद छु बहते झर–झर,
कण–कण से आंसू के निर्झर
हो उठता जीवन मृदु उर्वर
लघु मानस में वह असीम जग को आमन्त्रित कर लाता।[6]

विरह की घड़ियाँ हुई, अलि, मधुर मधु की यामिनी–सी।
सजनि अंतर्हित हुआ है 'आज' में धुंधला विफल 'कल'।
हो गया है मिलन एकाकार मेरे विरह में मिल,
राह मेरी देखती स्मृति अब निराशा पुजारिनी सी।[7]

6. **वेदना में मानवीय ममता का रूप**– दीपशिखा के गीतों में इस वेदना ने मानवीय ममता का रूप ले लिया है। कवयित्री अपने हृदय की वेदना को संसार की वेदना में मिला देना चाहती है।

'मिट चली घटा अधीर
प्यासे का जान ग्राम
झुलसे का पूछ नाम
धरती के चरणों पर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

नभ के घर शत प्रणाम,
गल गया तुषार भार,
बनक रवह छवि शरीर।[8]

7. निराला की वेदनानुभूति–

निराला के जीवन में विरह– निराला का व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन बड़ा चिन्तापूर्ण रहा। उन्हें कठिनाईयों एवं अभावों की वेदी पर अपनी पत्नी एवं पुत्री की आहुति चढानी पड़ी। जीवन की कठिनाईयों और अभावों का चीत्कार उनकी कविता में भी सुनाई पड़ता है–

जीवन चिरकालिक वन्दन
मेरा अन्तर बसु कठोर
देना जी भरकर झकझोर
मेरे निशि की गहन अन्धतम
निशि न कभी हो भोर।[9]

– कवि ने अपनी वियुक्ता पत्नी की करूणा स्मृति में 'उसकी स्मृतिः' 'स्मृतिः', 'स्वप्न स्मृति', 'शेष' आदि कविताऐं लिखी जो विरह वेदना से ओत–प्रोत हैं। उनकी 'स्मृति' शीर्षक कविता की मर्मस्पर्शी पक्तियाँ–

'वह कली सदा को चली गई दुनिया से
पर सौरभ से पूरित आज दिगन्ध।'[10]

निराला की समाज एवं मानवतावाद के प्रति वेदनानुति– निराला के समाज में फैले हुए दरिद्र, शोषण, दमन के प्रति अपनी संवेदना प्रकट की है। दुःख और वेदना उनके काव्य में देखी जा सकती है। इस दृष्टि से विधवा, भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर, रास्ते की धूलि से आदि रचनाएँ उल्लेखनीय है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा सी
वह दीपशिखा सी शान्त भाव में लीन
वह क्रूर काल ताण्डव की स्मृति रेखा सी

वह टूटे तरू की छुट्टी लता सी दीन (निराला! अपरा (विधवा))
दलित भारत की वही विधवा है।[11] पृ0 57

'दीन' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है कि निराला ने दीनजनों की पीडा का अनुभव किया है।

सह जाते हो
उत्पीड़न की कीड़ सदा निरंकुश नग्न,
हृदय तुम्हारा दुर्बल होता मग्न,
अन्तिम आशा के कानों में
स्पन्दित हम सबके प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथाएँ
क्षीण कंठ की करूण कथाएँ
कह जाते हो। निरालाः परिमल (दीन) पृ0 118

पंत की वेदनानुभूति– पंत जी के काव्य में भी वेदनानुभूति विविध रूपों में व्यक्त हुई है।

–जिज्ञासा में वेदना : कवि को प्रकृति में सर्वत्र उल्लास दृष्टिगोचर होता है, किन्तु अपने हृदय में उसका अभाव दिखाई देता है, इसलिए स्वभावतः उसे वेदनानुभूति होती है। 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता में ऐसा ही वेदना भाव व्यक्त हुआ है।

प्रथम रश्मि का आना, रंगिणी।
तूने कैसे पहचाना
कहाँ–कहाँ है बाल विहंगिनि
पाया यह स्वर्गिक गाना।[12]

पंत ने कहा है कि वेणु के स्वर में मर्म वेदना भी होती है।

गोपी मोंहीं सुन मादन स्वर
राधा रोई अर्पण कर मन
यह प्राणों की पावक वंशी
बजती रहती रे क्षण अनुक्षण।

अनित्यता की भावना से उत्पन्न वेदनानुभूति –

प्रकृति के सौन्दर्य निरीक्षण में कवि की दृष्टि उसकी अनित्यता की ओर भी गई।

कुसुमों के जीवन का पल
हंसते ही जग में देखा
इस म्लान मलिन अधरों पर
स्थिर रही न स्थित रेखा।[13]

पंत के जीवन में वेदनानुभूति –

कवि सामाजिक दुःख दूर करने के लिए अपने हृदय को वेदना से पवित्र करने का अभिलाषी है। उसे विश्वास है कि मन में करूणा का प्रसार होने से जीवन महान बनता है। रस प्रसंग में उनके द्वारा प्रस्तुत विरह की अतिश्योक्ति सूक्ष्म, मार्मिक और ध्वन्यात्मक चित्रण उदृत किया जा रहा है।

''विरह! अहह, कराहते इस शब्द को
किस कुलिस की तीक्ष्ण चुभती नोक से
निठुर विधि ने अश्रुओं से है लिखा।[14]

प्रसाद की वेदनानुभूति–

छायावादी काव्य में वेदना अथवा दुःखवादी प्रवृति की अभिव्यक्ति की दृष्टि से प्रसाद की रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं। 'कामायनी'' में व्यंजित वेदनानुभूति से ही आनन्दवाद का जन्म होता है। इस वेदनानुभूति में छायावादी स्वानुभूति की निवृति, रहस्यवादी अनुभूति एवं काव्य

सुलभ सेवा भावना का समन्वय हुआ है। इनके जीवन में भौतिक विरह, हार्दिक विरह, बौद्धिक विरह, और शारीरिक विरह दिखाई देता है।

– आशासर्ग में हार्दिक वेदनानुभूति दिखाई पड़ती है–

कब तक और अकेले? कह दो
हे मेरे जीवन, बोलो?
किसे सुनाऊँ कथा? कहो मत
अपनी विधि न व्यर्थ खोलो।।[15]

–जयशंकर प्रसाद की विरहनुभूति इसी प्रकार है :

वे कहते है जब अपने प्रियजन दूर होते है तो अत्याधिक दुःख होता है।

''जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छाई।
दुदिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।।''

प्रियजन दृग सीमा से जभी दूर होते,
ये नयन–वियोगी रक्त के अश्रु रोते,
सहचर–सुखक्रीड़ा नेत्र के सामने भी
प्रतिक्षण लगती है नचने चित में भी।।

–प्रसाद की संकल्पनात्मक विरहनुभूति :

श्रद्धा के जीवन में इसका स्वरूप भली भांति मुखरित हुआ है। श्रद्धा के जीवन में इसका स्वरूप भली–भाँति मुखरित हुआ है। श्रद्धा वेदना को जीतने के लिए ललित कलाओं के द्वारा अपने जीवन का विकास करना चाहती है–

दृष्टि जब जाती हिमगिरि की ओर,
प्रश्न करता मन अधिक अधीर।
धरा की यह सिकडुन भयभीत,
अहा कैसी है? क्या है पीर।[16]

–प्रसाद की समाज व मानवतावाद के प्रति वेदनानुभूति–

श्रद्धा मनु के द्वारा यज्ञ में बलि किए गए पशु के लिए दुःखी होती है। वह मनु को हिंसा से विरत करने के लिए अनेक तर्क देकर समझाना चाहती है जो निरीह पशु जीवित रहकर भी हमारे उपयोगी है। हिंसा करने से क्या लाभ आदि–

पर जो निरीह जीकर भी कुछ उपकारी होने में समर्थ ;
वे क्यों न जियें, उपयोगी बन इसका मैं समझ सकी न अर्थ
चमड़े उनके आवरण रहें ऊनों से मेरा चले काम,
जीवित हों, मांसल बनकर हम अमृत दुहे वे दुग्धधाम
वे द्रोह न करने के स्थल है, जो पाले जा सकते सहेतु
पशु से यदि हम कुछ ऊँचे है, तो भव जलनिधि में बनें सेतु।[17]

बाह्य प्रकृति और व्यक्तिगत जीवन में वेदनानुभूति–

प्रकृति और व्यक्तिगत जीवन दोनों ही अश्रुमय हो उठे हैं–

चातक की चकित पुकारे
श्यामा ध्वनि सुरस रसीली।
मेरी करूणाद्र कथा की
टुकड़ी आँसू से गीली।।[18]

वेदना में आध्यात्मिक भाव–

प्रसाद के काव्य में वेदना में भी आध्यात्मिक भाव उत्पन्न हो जाते हैं।

शक्ति तरंग प्रलय पावक का
उस त्रिकोण में निखर उठा सा
श्रंग और डमरू निनाद बस
सकल विश्व में बिखर उठा–सा।[19]

प्रेम का अभाव– छायावादी कवियों ने स्वतः गाया है कि उन्हें प्रेम नहीं प्राप्त हुआ, कभी प्रिय ने ही नहीं दिया, कभी समाज के कारण प्रेम नहीं मिल पाया।

चिर तृषित कंठ से तृप्त विधुर
वह कौन अंकिचन अति आतुर
अत्यन्त तिरस्कृत अर्थ सदृश
ध्वनि कम्पित करता बार–बार
धीरे से वह उठता पुकार
मुझको न मिला रे कभी प्यार।[20] (लहर, चतुर्थ संस्करण, पृ034)

निष्कर्ष– निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छायावादी हिन्दी कविताओं में वेदना भाव की प्रभूत अभिव्यक्ति हुई है। यह वेदनाभाव कहीं तो कवियों के व्यक्तिगत जीवन के प्रति असंतोष से उद्भूत है। कहीं समाज में फैले शोषण और उत्पीड़न के प्रति असन्तोष से उद्भूत हुए है। प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा तो कभी भी घोर निराशावादी नहीं बन सके क्योंकि इन कवियों में आस्तिकता के संस्कार अत्यन्त प्रबल थे। ये कवि आत्म केन्द्रित भी हो जाते है, वेदना और पीड़ा को गले लगाते हैं, आदर्शवाद के वायवीय कल्पना लोक में विचरण करने लगते हैं, किन्तु उसमें कोई सन्देह नहीं कि इन कवियों ने जीवन के निषेधात्मक दृष्टिकोण को प्रश्रय न देकर, इस संसार को ही अपना लक्ष्य बनाया है।

सन्दर्भ –

1	महादेवी यामा (नीहार)	पृ0 32
2	छायावाद – सिंह	पृ0 117
3	महादेवी का काव्य– डॉ0 राधिका	पृ0 94
4	महादेवी–यामा	पृ0 139
5	महादेवी–यामा	पृ0 12
6	महादेवी–यामा	पृ0 197
7	छायावाद के आधार स्तम्भ– रामजी पाण्डेय	पृ0 46
8	म्हादेवी–दीपशिखा	पृ0 104

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

9	निराला–अनामिका (हताश) द्वितीय संस्करण	पृ0 9
10	निरालाः परिमल (उसकी स्मृति)	पृ0 97
11	निरालाः अपरा (विधवा)	पृ0 57
12	पन्तः अपरा (प्रथम रश्मि)	पृ0 34
13	पंतः गुंजन	पृ0 13
14	पल्लविनी	पृ0 14
15	प्रसादः कामयानी (आशा सर्ग)	पृ0 47
16	प्रसादः कामयानी	पृ0 270
17	कामयानी, ईर्ष्या सर्ग	पृ0136, 137
18	प्रसादः आँसू	पृ0 13
19	प्रसादः कामयानी, भारती भण्डार, प्रभाग	पृ0 273
20	लहर, चतुर्थ संस्करण,	पृ0 34